उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज

पाठ्यक्रम (SYLLABUS)

संस्कृत–प्रवक्ता (माध्यमिक शिक्षा)
(विषय कोड–05)

खण्ड–क : वैदिक साहित्य :

1. **ऋग्वेद संहिता –**

   (क) अग्निसूक्त (1.1),

   (ख) विष्णुसूक्त (1.154)

   (ग) प्रजापति (10.121) एवं

   (घ) इन्द्रसूक्त (2.12)

2. **यजुर्वेद संहिता –**

   क. शिवसंकल्पसूक्त 34(1–6)

   कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय– 1–3 वल्ली)

   वैदिक साहित्य का इतिहास : काल–निर्धारण तथा शिक्षा, व्याकरण एवं छन्द (वेदांगों का सामान्य)

खण्ड–ख : लौकिक साहित्य– परिचय :

निम्नलिखित ग्रन्थों से निर्धारित अंकों के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियों के भावार्थ, शब्द की व्याकरणात्मक–टिप्पणी, चरित्र–चित्रण और ग्रन्थकर्त्ता का सामान्य परिचय–

कादम्बरी (कथामुखम्), नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास), किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग); मेघदूतम् (पूर्वमेघ), नीतिशतकम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थांकपर्यन्त) मृच्छकटिकम् (प्रथम अंक), प्रतिमानाटकम्, उत्तररामचरितम् (तृतीयांकपर्यन्त), गद्य, पद्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य और नाटक का सामान्य–परिचय।

खण्ड–ग : साहित्यशास्त्र :

1. **काव्यप्रकाश एवं साहित्यदर्पण के अनुसार–**

   (क) काव्य–लक्षण, काव्य–प्रयोजन, शब्द–वृत्तियाँ,

   (ख) अलंकार–अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विभावना–विशेषोक्ति।

2. **ध्वन्यालोक – (प्रथम उद्योत)** ध्वनि का स्वरूप

3. **दशरूपक–** नाट्य का लक्षण, रूपक के भेद, अर्थप्रकृतियाँ, अवस्थाएँ, सन्धियाँ, नायक का स्वरूप एवं भेद

   पारिभाषिक शब्दावली– नान्दी, प्रस्तावना, सूत्रधार, प्रवेशक, विष्कम्भक, आकाशभाषित, जनान्तिक, अपवारित, भरतवाक्य।

खण्ड–घ : भारतीय दर्शन :

- भारतीय दर्शन का सामान्य–परिचय
- श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीय अध्याय)
- सांख्यकारिका– सत्कार्यवाद, प्रमाण, त्रिगुण का स्वरूप, पुरुष का स्वरूप, सृष्टि–प्रक्रिया
- वेदान्तसार– अनुबन्ध–चतुष्टय, साधन–चतुष्टय, पञ्चीकरण, अज्ञान का स्वरूप, सूक्ष्म एवं स्थूलशरीर, ब्रह्म का स्वरूप
- तर्कभाषा/तर्कसंग्रह– प्रारम्भ से लेकर अनुमानप्रमाणपर्यन्त।

खण्ड–ङ : भाषाविज्ञान एवं व्याकरण :

- भाषा का उद्भव एवं विकास
- भाषाओं का वर्गीकरण
- ध्वनिनियम
- अर्थपरिवर्तन
- संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषा का सामान्य–परिचय।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी–संज्ञाप्रकरण, सन्धिप्रकरण, कृदन्तप्रकरण, तद्धितप्रकरण एवं स्त्रीप्रत्ययप्रकरण।
- सिद्धान्तकौमुदी– कारकप्रकरण
- वाच्यपरिवर्तन।